

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾

और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन

يَوْمَ لَا تَمَلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी<sup>19</sup> और सारा हुक्म उस दिन **अल्लाह** का है

﴿١٩﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿٢١﴾ ﴿٢٢﴾ ﴿٢٣﴾ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٥﴾ ﴿٢٦﴾ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٨﴾ ﴿٢٩﴾ ﴿٣٠﴾ ﴿٣١﴾ ﴿٣٢﴾ ﴿٣٣﴾ ﴿٣٤﴾ ﴿٣٥﴾ ﴿٣٦﴾ ﴿٣٧﴾ ﴿٣٨﴾ ﴿٣٩﴾ ﴿٤٠﴾ ﴿٤١﴾ ﴿٤٢﴾ ﴿٤٣﴾ ﴿٤٤﴾ ﴿٤٥﴾ ﴿٤٦﴾ ﴿٤٧﴾ ﴿٤٨﴾ ﴿٤٩﴾ ﴿٥٠﴾ ﴿٥١﴾ ﴿٥٢﴾ ﴿٥٣﴾ ﴿٥٤﴾ ﴿٥٥﴾ ﴿٥٦﴾ ﴿٥٧﴾ ﴿٥٨﴾ ﴿٥٩﴾ ﴿٦०﴾ ﴿٦१﴾ ﴿٦२﴾ ﴿٦३﴾ ﴿٦४﴾ ﴿٦५﴾ ﴿٦६﴾ ﴿٦७﴾ ﴿٦८﴾ ﴿٦९﴾ ﴿٧०﴾ ﴿٧१﴾ ﴿٧२﴾ ﴿٧३﴾ ﴿٧४﴾ ﴿٧५﴾ ﴿٧६﴾ ﴿٧७﴾ ﴿٧८﴾ ﴿٧९﴾ ﴿८०﴾ ﴿८१﴾ ﴿८२﴾ ﴿८३﴾ ﴿८४﴾ ﴿८५﴾ ﴿८६﴾ ﴿८७﴾ ﴿८८﴾ ﴿८९﴾ ﴿९०﴾ ﴿९१﴾ ﴿९२﴾ ﴿९३﴾ ﴿९४﴾ ﴿९५﴾ ﴿९६﴾ ﴿९७﴾ ﴿९८﴾ ﴿९९﴾ ﴿१००﴾

सूरए मुतफ़िफ़ीन मक्किया है, इस में छतीस आयतें और एक रुकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**अल्लाह** के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला<sup>1</sup>

وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ ﴿١﴾ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿٢﴾

कम तोलने वालों की खराबी है वोह कि जब औरों से माप (नाप कर) लें पूरा लें

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ﴿٣﴾ أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ

और जब उन्हें माप या तोल कर दें कम कर दें क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें

مَبْعُوثُونَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾

उठना है एक अज़मत वाले दिन के लिये<sup>2</sup> जिस दिन सब लोग<sup>3</sup> रबूल आलमीन के हुज़ूर खड़े होंगे

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ﴿٧﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ﴿٨﴾

बेशक काफ़ि़रों की लिखत<sup>4</sup> सब से नीची जगह सिज्जीन में है<sup>5</sup> और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है<sup>6</sup>

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يَكْذِبُونَ

वोह लिखत एक मोहर किया नविशता (तहरीर नामा) है<sup>7</sup> उस दिन<sup>8</sup> झुटलाने वालों की खराबी है जो इन्साफ़ के

19 : या'नी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नपअ न पहुंचा सकेगा। (٤٨:١) 1 : "सूरए मुतफ़िफ़ीन" एक क़ौल में मक्किया है और एक में मदनिय्या और एक क़ौल यह है कि ज़मानए हिजरत में मक्कए मुकर्रमा व मदीनए तय्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई, इस सूत में एक रुकूअ, छतीस आयतें, एक सो उन्हत्तर कलिमे और सात सो तीस हर्फ हैं। शाने नुज़ूल : रसूले करीम ﷺ जब मदीनए तय्यिबा तशरीफ़ फरमा हुए तो यहां के लोग पैमाने में ख़ियानत करते थे, बिल खुसूस एक शख्स अबू जुहैना ऐसा था कि वोह दो पैमाने रखता था लेने का और, देने का और। उन लोगों के हक में येह आयतें नाज़िल हुई और उन्हे पैमाने में अदल करने का हुक्म दिया गया। 2 : या'नी रोजे क़ियामत, उस रोज़ ज़र्रे ज़र्रे का हिसाब किया जाएगा। 3 : अपनी क़ब्रों से उठ कर 4 : या'नी उन के आ'माल नामे। 5 : सिज्जीन सातवीं ज़मीन के अस्फल में एक मक़ाम है जो इब्लीस और उस के लश्करों का महल है। 6 : या'नी वोह निहायत ही होल व हैबत का मक़ाम है। 7 : जो न मिट सकता है न बदल सकता है। 8 : जब कि वोह नविशता (लिखा हुवा) निकाला जाएगा।

بِیَوْمِ الدِّینِ ۱۱ وَمَا یُکَذِّبُ بِهِ إِلَّا کُلُّ مُعْتَدٍ أَثِیمٍ ۱۲ إِذَا تَلَّى

दिन को झुटलाते हैं<sup>9</sup> और इसे न झुटलाएगा मगर हर सरकश गुनहगार<sup>10</sup> जब उस पर हमारी आयतें

عَلَيْهِ ائْتَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۱۳ كَلَّا بَلْ سَأَنَ عَلَى قُلُوبِهِمْ

पढ़ी जाएं कहे<sup>11</sup> अगलों की कहानियां हैं कोई नहीं<sup>12</sup> बल्कि उन के दिलों पर जंग चढ़ा दिया है

مَا كَانُوا یَكْسِبُونَ ۱۴ كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ یَوْمَئِذٍ لَّحَجُوبُونَ ۱۵

उन की कमाइयों ने<sup>13</sup> हां हां बेशक वोह उस दिन<sup>14</sup> अपने रब के दीदार से महरूम है<sup>15</sup>

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِیمِ ۱۶ ثُمَّ یُقَالُ هَذَا الَّذِی كُنْتُمْ بِهِ

फिर बेशक उन्हें जहन्नम में दाखिल होना फिर कहा जाएगा यह है वोह<sup>16</sup> जिसे तुम

تُكذِّبُونَ ۱۷ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِی عَلَیِّینَ ۱۸ وَمَا أَدْرَاكَ

झुटलाते थे<sup>17</sup> हां हां बेशक नेकों की लिखत<sup>18</sup> सब से ऊंचे महल इल्लिय्यीन में है<sup>19</sup> और तू क्या जाने

مَا عَلَیُّونَ ۱۹ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۲۰ یَشْهَدُهُ الْبُقَرَاءُ ۲۱ إِنَّ الْأَبْرَارَ

इल्लिय्यीन कैसी है<sup>20</sup> वोह लिखत एक मोहर किया नविशता (तहरीर नामा) है<sup>21</sup> कि मुकर्रब<sup>22</sup> जिस की जियारत करते हैं बेशक नेकोकार

لَفِی نَعِیمٍ ۲۲ عَلَى الْأَرَآءِکَ یَنْظُرُونَ ۲۳ تَعْرِفُ فِی وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ

जूरर चैन में हैं तख्तों पर देखते हैं<sup>23</sup> तो उन के चेहरों में चैन की ताजगी

النَّعِیمِ ۲۴ یُسْقَوْنَ مِنْ رَحِیقٍ مَّخْمُومٍ ۲۵ خِیمَةُ مَسْکٍ ۲۶ وَفِی ذَٰلِكَ

पहचाने<sup>24</sup> निथरी (खालिस व पाक) शराब पिलाए जाएंगे जो मोहर की हुई रखी है<sup>25</sup> उस की मोहर मुश्क पर है और इसी पर

9 : और रोजे जज़ा या'नी कियामत के मुन्किर हैं । 10 : हृद से गुजरने वाला । 11 : उन की निस्वत कि येह 12 : उस का कहना ग्लूत है । 13 : उन मआसी और गुनाहों ने जो वोह करते हैं या'नी अपने आ'माले बद की शामत से उन के दिल जंग खुर्दा और सियाह हो गए । हदीस शरीफ में है कि सथियदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : जब बन्दा कोई गुनाह करता है उस के दिल में एक नुक़्ताए सियाह पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज आता है और तौबा व इस्तिफ़ार करता है तो दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि तमाम क़ल्ब सियाह हो जाता है । और येही रैन या'नी वोह जंग है जिस का आयत में ज़िक्र हुवा । (7:6) 14 : या'नी रोजे कियामत 15 : जैसा कि दुन्या में उस की तौहीद से महरूम रहे । **मसअला** : इस आयत से साबित हुवा कि मोमिनीन को आख़िरत में दीदारे इलाही की ने'मत मुयस्सर आएगी, क्यूं कि महरूम दीदार से कुफ़र की वईद में ज़िक्र की गई और जो चीज़ कुफ़र के लिये वईद व तहदीद हो वोह मुसल्मान के हक़ में साबित हो नहीं सकती तो लाज़िम आया कि मोमिनीन के हक़ में येह महरूमो साबित न हो । हज़रते इमाम मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फरमाया कि जब उस ने अपने दुश्मनों को अपने दीदार से महरूम किया तो दोस्तों को अपनी तजल्ली से नवाजेगा और अपने दीदार से सरफ़राज़ फ़रमाएगा । 16 : अज़ाब 17 : दुन्या में 18 : या'नी मोमिनीने सादिक्कीन के आ'माल नामे 19 : इल्लिय्यीन सातवें आस्मान में ज़ेरे अर्श है । 20 : या'नी उस की शान अज़ीब अज़मत वाली है । 21 : इल्लिय्यीन में । उस में उन के आ'माल लिखे हैं । 22 : फ़िरिशते 23 : **अबलाह** तआला के इक्राम और उस की ने'मतों को जो उस ने उन्हें अता फ़रमाई और अपने दुश्मनों को जो तरह तरह के अज़ाब में गिरफ़्तार हैं । 24 : कि वोह खुशी से चमकते दमकते होंगे और सुरूरे क़ल्ब के आसार उन चेहरों पर नुमायां होंगे । 25 : कि अबरार ही उस की मोहर तोड़ेंगे ।

فَلْيَتَأْفِسِ الْبَشَافِسُونَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَشْرَبُ

चाहिये कि ललचाएं ललचाने वाले<sup>26</sup> और उस की मिलौनी (मिलावट) तस्नीम से है<sup>27</sup> वोह चश्मा जिस से

بِهَا الْمُتَّقِرُّونَ ﴿٢٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا

मुक़र्रबाने बारगाह पीते हैं<sup>28</sup> बेशक मुजरिम लोग<sup>29</sup> ईमान वालों से<sup>30</sup>

يُضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَرُونَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ

हंसा करते थे और जब वोह<sup>31</sup> इन पर गुज़रते तो येह आपस में उन पर आंखों से इशारे करते<sup>32</sup> और जब<sup>33</sup> अपने घर

أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَؤُلَاءِ

पलटते खुशियां करते पलटते<sup>34</sup> और जब मुसलमानों को देखते कहते बेशक येह लोग

لَصَّالُونَ ﴿٣٢﴾ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِينَ

बहके हुए हैं<sup>35</sup> और येह<sup>36</sup> कुछ उन पर निगहबान बना कर न भेजे गए<sup>37</sup> तो आज<sup>38</sup> ईमान

آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾ عَلَىٰ الْأَرَآئِكِ لَا يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾ هَلْ

वाले काफ़िरों से हंसते हैं<sup>39</sup> तख्तों पर बैठे देखते हैं<sup>40</sup> क्यूं

ثُوبَ الْكُفَّارِ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किये का<sup>41</sup>

26 : ताआत की तरफ़ सक्कत कर के और बुराइयों से बाज़ रह कर । 27 : जो जन्नत की शराबों में आ'ला है । 28 : या'नी मुक़र्रबान ख़ालिस शराबे तस्नीम पीते हैं और बाक़ी जन्नतियों की शराबों में शराबे तस्नीम मिलाई जाती है । 29 : मिस्ल अबू जहल और वलीद बिन मुगीरा और आस बिन वाइल वग़ैरा रुआसाए कुफ़्फ़ार के 30 : मिस्ल हज़रते अम्मार व ख़ब्बाब व सुहैब व बिलाल वग़ैरा फ़ुक्राए मोमिनीन के । 31 : मोमिनीन 32 : ब त्रीके ता'न व ऐब के । शाने नुज़ूल : मन्कूल है कि हज़रत अलिये मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मुसलमानों की एक जमाअत में तशरीफ़ ले जा रहे थे, मुनाफ़िक्कीन ने उन्हें देख कर आंखों से इशारे किये और मस्ख़रगी से हंसे और आपस में उन हज़रत के हक़ में बेहूदा कलिमात कहे तो इस से पहले कि अलिये मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में पहुंचें येह आयतें नाज़िल हुई । 33 : कुफ़्फ़ार 34 : या'नी मुसलमानों को बुरा कह कर आपस में उन की हंसी बनाते और खुश होते हुए । 35 : कि सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर ईमान लाए और दुन्या की लज़्ज़तों को आख़िरत की उम्मीदों पर छोड़ दिया । **اَللّٰهُ** तआला फ़रमाता है : 36 : कुफ़्फ़ार 37 : कि उन के अहवाल व आ'माल पर गिरिफ़्त करें, बल्कि उन्हें अपनी इस्लाह का हुक़म दिया गया है, वोह अपना हाल दुरुस्त करें दूसरों को बे वुकूफ़ बताने और उन की हंसी उड़ाने से क्या फ़ाएदा उठा सकते हैं । 38 : या'नी रोजे क़ियामत 39 : जैसा काफ़िर दुन्या में मुसलमानों की गुर्बत व मेहनत पर हंसते थे, यहां मुआमला बर अक्स है : मोमिन दाइमी ऐशो राहत में हैं और काफ़िर ज़िल्लतो ख़्वारी के दाइमी अज़ाब में, जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है, काफ़िर उस से निकलने के लिये दरवाज़े की तरफ़ दौड़ते हैं, जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचते हैं दरवाज़ा बन्द हो जाता है, बार बार ऐसा ही होता है । काफ़िरों की येह हालत देख कर मुसलमान उन से हंसी करते हैं और मुसलमानों का हाल येह है कि वोह जन्नत में जवाहिरात के 40 : कुफ़्फ़ार की ज़िल्लतो रुस्वाई और शिद्दे अज़ाब को और उस पर हंसते हैं । 41 : या'नी उन आ'माल का जो उन्होंने ने दुन्या में किये थे ।